भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १३ से १९ जून, २०१६ साप्ताहिक सलाह

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	जून माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी॰)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	13	14	15	16	17	18	19	
पंजाब								
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	खेतों में कपास तथा खरपतवार पर सफेद मक्खी के लिए नियमित निगरानी करते रहें । खेतों को खरपतवार से मुक्त रखें। कपास पर सफेद मक्खी का प्रकोप 0.2 से 4. प्रौढ़ 20 प्रति पत्ति दर्ज किया गया। फरीदकोट में कपास पर सफेद मक्खी की औसत संख्या बहेवाडा में 0.67, धाब शेर सिंह गाँव में 0.30, अजीत गिल गाँव में 2. तथा खारा गाँव में 20 2. प्रौढ़ प्रति 20पत्ती दर्ज की गई। वर्षा नहीं होने की स्थिती में उच्च तापमान पर पौधे झुलस रहे हैं अत बुआई के एक : महीने बाद खेतों की सिंचाई करें। हरियाणा के अधिकांश हिस्सों में फसल पौद अवस्था में है । शीघ्र बुआई की गई फसल में गुडाई कार्य करें। किसान भाई हर सप्ताह फसल पर नाशीकीटों की संख्या की निगरानी करते रहें तथा रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव को यथा संभव टालें। आवश्यकता के अनुसार सिंचाई करें । अप्रैल में बोई गई देसी अथवा अमेरिकन किस्मों व संकरों में पहली सिंचाई दी जा रही है । बुआई पश्चात की फसल निगरानी की जा रही है । पहली सिंचाई दिए जाने वाले खेतों में खरपतवारों का प्रकोप देखा जा रहा है। खेत की मेढ़ों तथा आस पास के क्षेत्रों में भी- खरपतवार देखे जा सकते हैं। सिरसा में कुछ स्थानों तथा आस 2 पास के क्षेत्रों में सगेद मक्खी की संख्या-से प्रति 11 पत्तियाँ रिपोर्ट की गई है 3। कुछ स्थानों में किसानों के खेतों में जड़-गलन देसी कपास *जीआर्बोरियम* . में देखी गई है । कीट संख्या वृद्धि के लिए किसान भाई फसल की नियमित निगरानी करते रहें । आर्थिक हानि स्तर पार करने पर निंबीसिडिन पानी .ली 200 पीपीएम का 300में 1. 0 ली एकड़/की दर से छिड़काव किया जा सकता है । आर्थिक हानि सीमा के पास रस चूषक कीटों की संख्या पहुँचने पर नीम आधारित कीटनाशकों का छिड़काव किया जा सकता है। पहली सिंचाई के बाद फसल से खरपतवारों को निकालें । किसी खेत में जड़ -गलन पहले रही है तो इसके लक्षण
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	1	0	0	0	0	0	
मानसा	0	2	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	1	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	1	1	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	

								दिखाई देने पर किसान भाइयों को कार्बेडेंजिम का पानी में घोल 1. .प्रति ली/ग्रा 0की दर से प्रभावित पौधों की जड़ में डालें|
उड़ीसा								इस खरीफ मौसम में अच्छी वर्षा होने की सम्भावना है | मानसूनपूर्व वर्षा के बाद खेतों की तैयारी चल रही है | किसानों को सलाह दी जाती है की पहले से ही बीज खरीद कर रख लें |जारी होने से पहले की क़िस्मों क्यूयूएटीबीएस 279-तथा बीएस 30-को सघन रोपण प्रणाली के परीक्षण के लिए लगा सकते हैं|
कोरापुट	0	7	20	19	15	20	7	
कालाहांडी	0	9	25	21	16	5	9	
बोलांगीर	0	4	0	30	0	1	2	
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	जून के तीसरे सप्ताह में वर्षा होने का अनुमान है| बुआई की तैयारी पूरी कर लें | जामनगर तथा राजकोट में मानसून आगमन में देरी हो सकती है| वर्षा आधारित कपास के लिए जल संरक्षण उपायों पर ध्यान देने की आवशकता है| बारानी किसानों के लिए देसीकपास लगाने की प्राथमिकता होगी | यद्यपि वडोदरा, पाटण तथा मेहसाना जिलों में मानसून का आगमन जून के तीसरे सप्ताह में होने की संभावना है | लेकिन वर्षा का वितरण असमान रहेगा| इन जिलों में जुलाई के तीसरे सप्ताह से अगस्त के तीसरे सप्ताह के मध्य लंबा सूखाकाल रहने का अनुमान है| इससे नन्ही फसल को सूखा प्रतिबल का सामना करना पड़ेगा| संरक्षित सिंचाई के उपाय यथा संभव करें| नाली ,मेढ़ पर बुआई-पलवार का प्रयोग जैसे नमी संरक्षण के उपाय सावधानी के रूप में बारानी खेती वाले किसान अवश्य करें|
भावनगर	0	2	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	20	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	0	0	0	0	0	0	5	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	0	0	0	0	0	0	जून से वर्षा होने की संभवाना है 20| जून से पहले हर 25 हालत में समय पर बुआई के लिए तैयारी कर लें| खण्डवा में कपास की बुआई जारी है|
धार	0	0	0	0	0	0	2	
खंडवा	0	0	0	0	0	2	5	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	1	1	2	3	नागपुर :जून 19- जुलाई के मध्य 4 से 20अच्छी वर्षा होने की संभावना है| पहले अनुमान के अनुसार जुलाई में 15 दिनों के लिए सूखाकाल रहेगा| जून के मध्य 25 से 14 बुआई का उचित समय है| असिंचित खेतों में जल संरक्षण उपाय करने आवश्यक हैं| जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई के पहले सप्ताह के मध्य बुआई अवश्य कर दें| सन 2016के लिए सिफारिश की गई किस्में एवं संकर: अगेती से मध्यम अवधि की किस्में जैसे, सूरज, एन एच-615, एकेएच-081, अथवा फुले धनवंतरि, सीआईसीआर -रोजा, एकेए-07 जैसी देसी क़िस्मों का चुनाव सूखी बुआई के लिए किया जा सकता है | इन्हे सघन रोपण प्रणाली में
वर्धा	0	0	0	0	0	1	2	
चंद्रपुर	1	0	2	1	1	3	4	
यवतमाल	0	0	0	0	0	2	5	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	1	1	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	102	
नांदेड़	0	0	0	3	0	9	107	
बीड़	2	6	0	0	0	0	75	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	2	0	0	0	0	5	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	11	

जालना	0	0	0	0	0	0	27
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	24

45× 10सेमी. अथवा 60× की दूरी .सेमी 10पर किस्म विशेष की सिफारिश की गई दूरी पर जून के दूसरे अथवा तीसरे सप्ताह में लगाया जा सकता है | हाल ही के मानसून स्थिति के अनुमान के अनुसार जैसिड के लिए प्रतिरोधी बीटी संकर बुआई के लिए इस प्रकार हैं ,अंकुर-जय बीटी, अंकुर-3034, अंकुर-3028, एमआरसी -7347, एमआरसी -7383,अजीत-11, अजीत-111, अजीत -155, राशी -779,राशी-625, राशी -656, मल्लिका, बन्नी, भक्ति, सोना , बलवान , सुरक्षा , जादू , केसीएच-711, केसीएच-144, आदि| यहाँ दी गई बीटी संक रों की सूची सांकेतिक है | इनके संपादन की पुष्टि आई सी ए आर –सी आई सी आर द्वारा नहीं की गई है| ऐसे अन्य बीटी संकर भी हैं जो जैसिड के लिए सहनशील हैं| क्षेत्र विशेष में किसानों के अनुभवों तथा बीज कंपनियों से जानकारी लेकर यह सूची दी गई है|महाराष्ट्र में दीर्घ अवधिके बीटी संकरों की खेती से बचें|इनमें नवंबरदि-संबर में गुलाबी सूँडी)इल्ली का (प्रकोप हो सकता है |यह जानना महत्वपूर्ण है कि ऊपर दी गई किस्में30 संकर फसल वृद्धि के/- 50दिनों की फसल में यूरिया के अधिक प्रयोग और मोनोक्रोटो फॉस, एसीफेट , इमीडेक्लोप्रिड, थायोमेथोक्जाम , आदि कीटनाशकों के अनुप्रयोग से फसल अवधि बढ़ जाती है|

<u>कपास के लिए भूमि की तैयारी तथा सावधानी के उपाय :</u>

बेहतर फसल लेने के लिए जमीन की अच्छी तैयारी आवश्यक है| खेत की अच्छी तैयारी न करने पर अंकुरण में कमी तथा पौधों की संख्या में कमी तथा वानस्पतिक वृद्धि अवस्था में खरपतवारों से अधिक प्रतिस्पर्धा करनी पड़ सकती है| अत :अच्छी खेती के लिएखेत की अच्छी तैयारी पहली शर्त है| वर्षा के प्रारंभ में जमीन की अपेक्षाकृत शीघ्र तैयारी आवश्यक होती है जिसके लिए निम्न कृषि क्रियाएँ करना आवश्यक है:

1. बारानी तथा सिंचित कपास:पूर्व फसल के ठुंठो, अवशेषों, पुरानी खराब कपास, आदि को हाथ से चुनकर खेत को साफ करें| इनमें नाशकीटों की सुप्त अवस्थाएँ तथा रोग के निवेशन विद्यमान हो सकते हैं | अत: स्वस्थ फसल लेने के लिए फसल में स्वच्छता बनाए रखना आवश्यक है|
2. तीन वर्षों में एक बार खेत की गहरी जुताई करें|
3. जमीन की सूखी अवस्था में 12से सेमी 15. गहरी जुताई करें| इससे जमीन की निचली सतह कडक होने से बचेगी तथा जल तथा पोषक तत्वों की हानी भी नहीं हो गी| उथली तथा अत्यधिक गहरी जुताई कपास की खेती में सहायक नहीं होगी| गहरी जुताई से जमीन के नीचे की

								गहराई में बनी कड़क पर्त टूटती है| 4. गोबर की अच्छी सड़ी खाद 2- 3टन प्रति हे.की दर से अथवा केंचुआ खाद के2 . 5टन प्रति हे.की दर से बुआई के10 - 15दिनों पहले 3से 4वर्षों के अंतराल पर अनुप्रयोग करने से मृदा की उर्वरा शक्ति को बनाए रखा जा सकता है| 5. गोबर की खाद/केंचुआ खाद खेत में बिखेरने के बाद मिट्टी पलटने वाले हल से 20-25 सेमी. गहरी जुताई करें| इससे यह खाद मृदा में भली प्रकार मिल जाएगी तथा छोटे आकार के ढेले)5 सेमी भी टूट (से अधिक . सकेंगे| 6. सिंचित परस्थिति में की दर से . टन प्रति हे 3 से 2 गोबर की खाद अथवा अन्य जैविक खादों का प्रयोग प्रति वर्ष करें| 7. सिंचित परिस्थिति में ढलान के आड़ी दिशा में चौड़ी मेंढ़ बनाकर बुआई 3से .सेमी 5गहराई में करें|बुआई के 30 दिनों के बाद मेढ़ों पर मिट्टी चढ़ाकर मजबूत करें| 8. पहली वर्षा के बाद ही पेंडीमेथ लीन जैसे अंकुरण पूर्व - खरपतवारनाशक का3 . 5ली/हे .सक्रिय तत्व की दर से जमीन पर छिड़काव करें| 9. मिट्टी के छोटे ढेलों को तोड़ने के लिए 2- 3बार बखर चलाएँ तथा जमीन को ढीला करने के लिए हल चलाएँ| 10. मिट्टी को भुरभुरी करने के लिए ट्रैक्टर से रोटावेटर चलाएँ| 11. अच्छी जल निकासी के लिए बुआई पूर्व जमीन को समतल करने के लिए)0.6 से 1.0% तक (लेवलर का प्रयोग यथा संभव करें| 12. उथली और माध्यम गहरी मृदाओं के लिए 180 से 150 – चौड़ी .सेमीबैड–नाली प्रणाली गहरी नाली के .सेमी30 साथ बनाएं| गहरी मृदाओं के लिए चौड़ी स्थाई मेंढ ट्रैक्टर अथवा बैलों से बनाएँ| 13. किस्म अथवा संकर की आवश्यक दूरी पर दतारी से खेत में लाईन खींचे| 14. आधार मात्रा के रूप में नत्रजन तथा स्फुरद की मध्यम मात्रा को कतारों में दें |नीम लेपित यूरिया 50किग्रा . तथा सिंगल सुपरफास्फेट के) बैग 6300किग्रा (.प्रति हे . दतारी की लाइनों में ड्रिल करें| 15. *एजोटोबेक्टर*, पीए.स 25 दोनों).बी.ग्रा प्रति किग्रा .बीज दर से (तथा *ट्राईकोडर्माविरीडी*) 8 ग्रा .प्रति किग्रा .बीज दर से (जैसे जैवउर्वरकों से बीज प्रक्रिया करें | इस उपचरित बीज की बुआई 24 घंटों के अन्दर ही करें|

16.मानसूनपूर्व कपास बीज की गहरी सूखी बुआई .सेमी 5 70 अथवा- वर्षा होने पर बुआई करें .मिमी 80| इससे अंकुरण अच्छा होगा तथा पौधो की संख्या समानरूप में रहेगी|

17.अंकुरण होने के एक सप्ताह पश्चा त डवरा से एक महीने तक अंतश:स्य क्रियाएँ करें|

<u>सावधानी के उपाय</u>

इस वर्ष मध्य जुलाई में भारी वर्षा की संभावना है | इससे जलमग्नता की स्थिति निर्माण हो सकती है | जुलाई के पहले पखवाड़े में सूखाकाल रह सकता है तथा मानसून जल्दी समाप्त होने पर वर्षा समाप्ति के बाद गूलर विकास की अवस्था में नमी की कमी महसूस होगी | मृदा से संबंधित अन्य कठिनाइयाँ भी काली मृदा में आ सकती हैं। खेत की तैयारी के समय ही निम्न सावधानी के उपाय करने से इन समस्याओं का मुक़ाबला कर सकते हैं|

<u>गहरी तथा चौडी दरारें:</u>

जैविक खादों का आ धिक क प्रयोग करके तथा उचित नमी रहते जुताई-गुड़ाई करने से इस समस्या को कम किया जा सकता है|

कैल्सियम कार्बोनेट की आधिक मात्रा:

तालाब की मिट्टी , राख़ ,प्रैसमड तथा जिप्सम जैसे भूसुधारकों का प्रयोग खेत की तैयारी से पहले करना | कपास के साथ दलहनी फसलें अंत फसल के रूप में अथवा: फसलचक्र में दलहनी जैसी अम्लता बढ़ाने वाली फसलें लेने से इस समस्या को कम किया जा सकता है|

खेत की जमीन की ऊपरी पर्त कड़ी हो जाना:

जमीन की तैयारी बैलो से अथवा जुताई उपकरणों से करना| जमीन की कड़ी पर्त को तोड़ने के लिए ट्रैक्टर के पुला ऊ से गहरी जुताई करना .सेमी 50|

जल की अच्छी निकासी व्यवस्था न होने से जलमग्नता:

जमीन की गहरी जुताई)50 सेमी(. करके जमीन का ढलान न्यूनतम 0. 6% करें| कपास की बुआई चौड़े बेड नाली- अथवा स्थाई चौड़ी मेंढ़ों पर अच्छी आंतरिक पानी निकासी के साथ करना|

दीर्घ सूखाकाल तथा सूखा के स्थिति :

वानस्पतिक वृद्धि अवस्था में जड़ क्षेत्र में जैविक खादों का अनुप्रयोग| सनई अथवा ढैंचा का पलवार के रूप में (बोरु) 40 बुआई के- दिनों 45पर करना तथा फसल क्रांतिक अवस्था में पूरक सिंचाई देना गूलर निर्माण तथा विकास) (अवस्था|

तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	0	0	2	6	15	50	इस सप्ताह वर्षा होने की संभावना है । जून से पहले 20 बुआई अवश्य कर दें। वर्षा का वितरण सामान्य रहेगा । जून तथा अगस्त के दूसरे पखवाड़े में बीच 1 से 2 दिनों का सूखाकाल रहेगा। वारंगल में .मिमी 800 मिमी तक 750 से 700 से अधिक तथा दूसरे जिलों में वर्षा होने की संभावना है। अगेती किस्में अथवा बीटी संकर बुआई के लिए प्रयोग करें।
वारंगल	2	0	0	0	0	35	20	
खम्मन	6	0	0	2	3	40	25	
कारिंगर	1	0	4	2	6	50	40	
नालगोंडा	2	0	0	0	0	35	20	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	6	1	2	0	2	25	8	शुरुआती अच्छी वर्षा होने के बाद संभावित लंबा सूखाकाल रह सकता है । मानसून वर्षा होने का वितरण असमान रहेगा। असिंचित स्थिति में नमी संरक्षण तकनीक अवश्य अपनाएँ।
प्रकासम	1	0	5	6	5	25	8	
कर्नाटक								
धारवाड़	9	7	2	3	7	10	13	जून 18से जुलाई 4के मध्य अच्छी वर्षा होने की संभावना है। हवेरी, धारवाड के कुछ हिस्सों तथा बेलगाव जिलों में बुआई कार्य प्रारंभ हो चुका है । अधिकांश हिस्सों में वर्षा होने के बाद ही बुआई का कार्य कपास उत्पादक जिलों में होगा ।सिंचित स्थिति में बुआई होने पर फसल पौद अवस्था में है। बुआई 90×) सेमी। 60आंतरजातीय बीटी संकर120 तथा(× 60सेमी) .अंतर्जातीय संकर (अंतर पर करें। प्रत्येक स्थल पर एकल बीज डालें। अंतिम 4 से 3 कतारोंमें रेफ्युजिया बीजों की बुआई करें । *एजोस्पीरिलम* तथा पीएसबी जैसे जैव उर्वरकों से बीजोपचर करें।
हवेरी	8	7	4	4	9	12	17	
मैसूर	0	2	7	8	6	13	16	
तमिलनाडू								
पेरंबलुर	1	2	2	0	0	0	0	कपास की बुआई में अभी समय है । खेत की तैयारी के लिए जुताई का कार्य चल रहा है।
सलेम	0	2	0	0	0	2	2	
त्रिची	0	0	2	0	0	0	0	
विरुडुनगर	1	0	0	0	0	2	3	

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन , डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस , डा. विश्लेष नगरारे , डा. ऋषि कुमार , डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संस्करण: डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)